आभिजातवर्ग का परिभ्रमण
(Circulation of elites class)

इसका सिद्धान्त मूलत: इस सिद्धान्त पर आधारित है कि कोई वर्ग पूर्णतया कभी बन्द नहीं होता। और जब कोई व्यक्ति किसी बहुत ऊँचे वर्ग पर पहुँच जाता है तो उसके अन्दर अराजकता उत्पन्न होती है और उसकी शक्ति नष्ट हो जाती है और उसका पतन होने लगता है और नीचे के वर्ग का कुशल व्यक्ति अपने को ऊपर उठाने के लिये कठिन परिश्रम व प्रयास करता है इन सभी का परिणाम होता है कि वर्ग परिवर्तित होता रहता है।

भारत की जाति व्यवस्था में कुछ जातियाँ जो सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक रूप से ऊपर की तरफ थी अब धीरे-२ नीचे आ रही है और कुछ जातियाँ जो पीछे थी अब प्रयास करके ऊपर की ओर जा रही है और यही आभिजात वर्ग का "परिभ्रमण" है।

Scanned with OKEN Scanner

हरबर्ट स्पेन्सर :-

हरबर्ट स्पेन्सर का जन्म 27 अप्रैल को 1820 ई० में इन्गलैण्ड में हुआ। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण ये रेल का इन्जीनियर बन गये। अपनी विद्वता के कारण 1848 में इकोनॉमिक्स पत्रिका का सम्पादन भी इन्होने की।

1863 में समाजशास्त्र के प्रथम पुस्तक प्रिन्सीपल आफ सोशीयोलॉजी पुस्तक को इन्होने प्रकाशित किया।

1868 में इसी पुस्तक को प्रकाशित करने के बाद ये समाजशास्त्र के प्रमुख विचारक बनकर प्रसिद्ध हुये।

मुख्य कितावें :-

प्रिन्सीपल आफ सोशीयोलॉजी, डिस्क्रीप्टिव सोशीयोलॉजी, प्रिन्सीपल आफ साइकोलॉजी, प्रिन्सीपल आफ इथीक्स आदि।

माना जाता है कि स्पेन्सर के अध्ययन में चार्ल्स डार्विन की प्रसिद्ध पुस्तक उद्विकास थ्योरी आफ स्पेशीज बहुत प्रभावकारी थी।